जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- ६६

प्यार और सहकार भरे परिवार बसें

(प्रवचन)

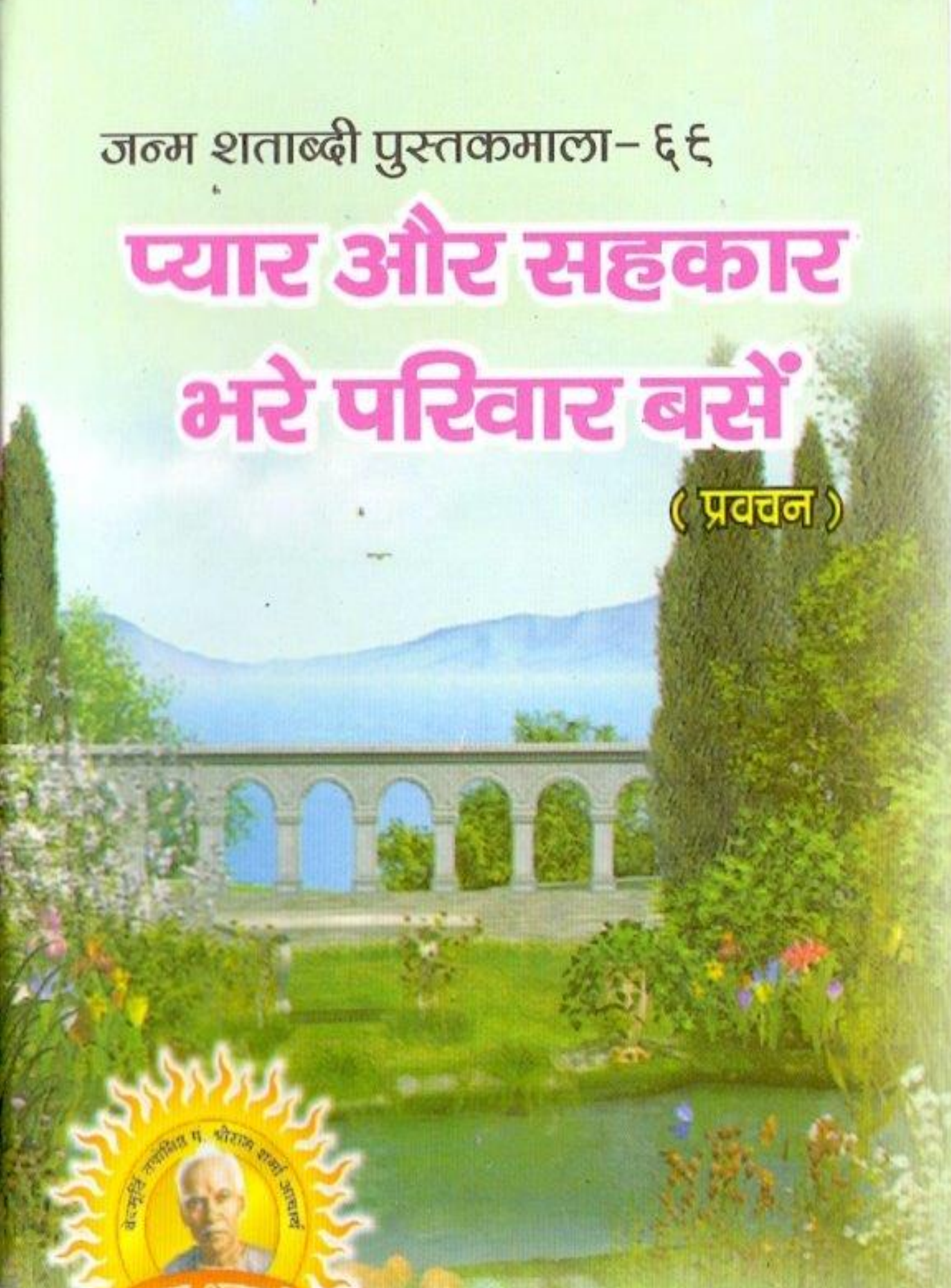

प्यार और सहकार भरे परिवार बसें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! संस्कारवान परिवार ही आगे बढ़ते, प्रगति करते और खुशहाल रहते हैं। अतः आपको अपने बच्चों को संस्कारवान बनाना चाहिए था, उन्हें स्नेह देना चाहिए था। आपने कुटुंब बनाया है, तो उसमें आपको संस्कार देना चाहिए था। आपको अपने कुटुंब में रंग-बिरंगे ठाठ-बाट नहीं बनाने चाहिए थे, वरन उसे स्नेह देना चाहिए था। आपने भारी भूल की है, जिसके कारण आज परिवार टूटते चले जा रहे हैं। आपको यह समझना चाहिए कि परिवार की एक ही माँग है—मोहब्बत, स्नेह।

आत्मा को चाहिए स्नेह

मित्रो! जब आपका पेट माँगता है कि हमें भूख लगी है, हमें रोटी मिलनी चाहिए, तो आप रोटी देते हैं। उसी प्रकार आपको अपने परिवार के लिए रोटी से ज्यादा मोहब्बत, प्यार देना चाहिए। शरीर का भीतरी हिस्सा अपने को चलाने के लिए रोटी माँगता है। बाहरी हिस्सा हमेशा ठंढक से, गरमी से बचाव चाहता है। उसके लिए कंबल तथा पंखा, कूलर की माँग करता है। उसकी आप पूर्ति करते हैं। परंतु साथियो! एक और चीज है आपके भीतर, उसका नाम है—'आत्मा'। आत्मा-अंतरात्मा की एक ही कसक है और वह एक ही चीज माँगती है। वह क्या है? वह है मोहब्बत, वह है स्नेह। आपकी बीबी क्या आपके घर में रोटी, कपड़ा के लिए आई है? क्या उसके घर में इनकी कमी थी? उसके घर में जब नौकरानी काम करती है, तो यहाँ किसलिए आई है? कामवासना की पूर्ति के लिए? नहीं, आपको नहीं मालूम, इसके लिए नहीं आई है।

तो किसके लिए आई है ? उसका एक ही मकसद है और वह है प्यार।

साथियो ! इनसान के भीतर चाहे वह मरद हो या औरत, उसके अंदर एक ऐसी भूख है, जिसका नाम है प्यार। वह दोनों एक ऐसा साथी, सहयोगी तथा अभिन्न अंग तलाश करते हैं, जो आपस में प्यार दे सके तथा आपस में घुल-मिलकर रह सके। वह दु:ख-सुख में साथी हो सके। हर कमजोरी को दोनों मिल-जुलकर दूर करते हैं। आप तो केवल बीबी की बात करते हैं, पर हम तो बच्चों की भी बात करते हैं। बच्चों को माँ का प्यार-मोहब्बत तो थोड़ा मिलता भी है, परंतु बाप का प्यार-मोहब्बत कहाँ मिलता है ?

मित्रो ! सभी के अंदर एक भूख होती है और वह है, प्यार-मोहब्बत की। उसके बिना इनसान की प्रगति नहीं हो सकती है। माँ का कर्त्तव्य तो पूरा हो जाता है। माँ ने उसके लिए खाना पका दिया, कपड़े साफ कर दिए, उसे स्नान करा दिया, परंतु बाप का क्या कोई कर्त्तव्य नहीं है ? उसे भी

सोचना होगा। माँ ने शरीर का उद्देश्य पूरा कर दिया, लेकिन आपने उसे प्यार दिया? नहीं साहब। हमने उसे नैनीताल में भरती करा दिया। उसके लिए ट्यूशन, आने-जाने के लिए साइकिल आदि की व्यवस्था कर दी। गुरुजी! आपका प्रवचन भी सुना दिया। अच्छा तो यह बता कि नैनीताल या देहरादून के स्कूल में बच्चे को माँ-बाप का प्यार मिलता है क्या? नहीं साहब। वहाँ तो नहीं मिलता है। तो उसका विकास कैसे होगा, कभी आपने सोचा है क्या? हम तो पर्याप्त रुपए हर महीना भेज देते हैं। हाँ, यह तो ठीक है कि उसने बच्चों को ऐटीकेट सिखा दिया होगा, 'थैंक्यू वेरी मच' सिखा दिया होगा, परंतु इससे क्या होता है? इससे क्या वह संस्कारवान बन जाएगा? इससे क्या उसे प्यार-मोहब्बत मिल जाएगी? नहीं साहब! यह तो हम नहीं कह सकते। मैं पूछता हूँ कि क्या वहाँ ऐसी कोई माँ है, जो उसे छाती से लगाकर प्यार दे सके? आपने देहरादून के विद्यालय में इन लावारिस बच्चों

को, इन अनाथ बच्चों को क्यों भरती करा दिया? आपने उसे अनाथ बना दिया। नहीं साहब! हमने तो उसे मिलिटरी स्कूल में भरती करा दिया। हमारा बच्चा साहब बन जाएगा। हम यह नहीं जानते हैं कि आपका बच्चा साहब बनेगा या धूर्त? बनता है, तो बन जाए, लेकिन इतना अवश्य है कि वह इनसान नहीं बन सकता।

मित्रो! इनसान बनने के लिए, उसे संस्कारवान बनाने के लिए प्यार-मोहब्बत की आवश्यकता है, जो इन पब्लिक स्कूलों में नहीं मिल सकता है। उसके लिए आपको बच्चों को प्यार-मोहब्बत देना चाहिए था, बच्चों को उसके लिए आपको समय देना चाहिए था, परंतु आपका सारा का सारा समय फिल्मों में, टी० वी० देखने, ताश-चौपड़ खेलने में, मटरगस्ती में एवं क्लबों में खत्म हो जाता है। फिर आप बच्चों को समय कब देंगे? इससे अच्छा है बच्चों को आप मार दीजिए। बच्चा कहता है कि हमें पापा का प्यार मिलना चाहिए और पापा है कि उधर से ही शराब

की बोतलों से टन्न होकर आ जाता है और घर में आकर खुराफात करता है। उसके पास समय कहाँ है, जो अपने बच्चों को, बीबी को प्यार एवं मोहब्बत दे सके। आज इसी के कारण समाज एवं परिवार समाप्त हो रहा है। इसे आपको सँभालना है।

मित्रो! क्या आप बच्चों को छाती से लगाएँगे? उसे छोटी-छोटी कहानियों से प्रेरणा देंगे? गुरुजी! हमने तो बच्चों के लिए नौकर रख छोड़ा है। नौकर ही बच्चों को खिला देता है, स्नान करा देता है। अच्छा तो बेटे! खाने के लिए भी नौकर रख ले न। गुरुजी! पूजा करने के लिए भी हमने एक नौकर रखा है। मंदिर में नौकर से काम चलेगा क्या? आप समझते नहीं हैं। क्या ये बच्चे आपके नौकरों के या आया के पेट में से पैदा हुए हैं, जो आपके बच्चों को ये प्यार देंगे। आपको अपने परिवार के लिए ज्यादा समय, पैसा खरच करना चाहिए था। आप आठ घंटे नौकरी करते हैं या व्यापार करते हैं, यह मैं मानता हूँ, परंतु जो सोलह घंटे आपके पास

बचते हैं, उतना समय आपको घर में, परिवार में रहना चाहिए। उसे हरा-भरा बनाना चाहिए, संस्कारवान बनाना चाहिए।

समय परिवार को दीजिए

गुरुजी! उतने समय के लिए तो हम फिल्म देखने चले जाते हैं। क्या मिलता है इन फिल्मों से, क्लबों से आपको? इन फिल्मों या क्लबों में क्या रखा है? अरे तू अपने बीबी-बच्चों से बात करना शुरू कर, फिर देख कैसा रहेगा सिनेमा? इससे अच्छा गुड्डा क्या आपको सिनेमा में मिल सकता है। आप जब अपने बच्चे को एक चाभी वाला खिलौना लाकर देते हैं, तो खुशी के मारे उछलने लगता है और कहता है कि मेरे पापाजी मेरे लिए लाए हैं। आपके घर में जिंदा गुड़िया है, पर उससे बात करने का आपके पास समय नहीं है। उससे दो मीठी बातें करने की आपको फुरसत नहीं है। आपको बच्चों को बिल्ली-बंदर की कहानी सुनाना नहीं आता? आपके बच्चे बिल्ली की कहानी, बंदर की

कहानी सुनने में कितना आनंद अनुभव करते हैं, इसका पता आपको नहीं है। अरे आपने यह मोहब्बत देखी नहीं है और न इसे देखने का आपका मन है। यह आपको पसंद नहीं है, तो फिर क्यों घर बसा लिया? आपने बच्चों को कसाईखाने में रख दिया है। आप कुटुंब बसाते हैं, तो उसे कसाईखाने में मत रखिए, उसे भूखा मत रखिए। आप उसकी आत्मा को मोहब्बत के बिना भूखा क्यों मारते हैं? क्या आप यह नौकरानी खरीद कर लाए हैं या कामवासना की मशीन खरीद कर लाए हैं? यह कौन है आपकी? आप इसे प्यार नहीं दे सकते? अरे इस प्रकार की मशीनें, विदेशों में रबर की औरतें मिलती हैं। आप उसी को खरीद लाइए। वह आप से कुछ नहीं माँगेगी। आपका खाना बनाने में कितना खरच होता है? वह तो कुछ रुपए में हो जाता है। फिर आपने इसके लिए औरत को क्यों रखा है? आपने अर्थशास्त्र पढ़ा है। आपको जोड़, भाग, गुणा आता है। आप कागज निकालिए और हिसाब लगा लीजिए। इसकी

अपेक्षा आप नौकर रख लेते तो आपको किफायती पड़ता।

मित्रो! आप खाना बनाने के लिए, कामवासना के लिए, घर की चौकीदारी के लिए घर बसाते हैं,तो आप गलती करते हैं। शादी-विवाह का यह मकसद नहीं है। इनसान के अंदर एक आत्मा है। उसके विकास के लिए मनुष्य कुटुंब बनाता है, घर बसाता है। आपने तो आत्मा को देखा भी नहीं, आत्मा का नाम सुना भी नहीं, आत्मा को आपने छुआ भी नहीं। आत्मा का आपने कभी संपर्क भी नहीं किया। एक पंडित जी आते हैं और कहते हैं कि आत्मा का साक्षात्कार करिए। आपको भ्रम-जंजाल में फँसाकर वे लूट लेते हैं।

साथियो! 'आत्मा' आदमी के भीतर एक सत्ता का नाम है, जो प्यार पीती है और प्यार पिलाती है। यह एक ही जगह पूरी हो सकती है, जिसका नाम कुटुंब है, जिसका नाम परिवार है। आज सारी की सारी चीजें भौतिक मिल रही हैं, अर्थात

आर्टीफीशियल। इस प्रकार के युग में आत्मीयता-प्यार कहाँ मिलेगा? यह सिर्फ एक ही फेक्टरी, एक ही उद्यान में मिलती है और उसका नाम है, कुटुंब-परिवार। आपने जो भी कमाया, सब उनके लिए खरच किया। आपने तप किया, तो केवल इस परिवार के लिए। आपने संत की तरह से, महात्मा की तरह से, राजा कर्ण की तरह से इसके लिए त्याग किया, सहयोग किया। राजा कर्ण जो भी कमाता था, वह समाज के लिए, धर्म के लिए दान कर देता था। आप भी राजा कर्ण की तरह से हैं। आपने जो कुछ भी कमाया, जो कुछ भी पाया, उन्हीं के लिए खरच कर दिया। उन्हीं के लिए, जिनका नाम कुटुंब है, परिवार है। हम कुटुंब से प्यार करते हैं, मोहब्बत करते हैं, इसलिए हमने यहाँ पर भी कुटुंब-परिवार बसा दिया है।

मित्रो! हमारी एक पुस्तक है—'सुनसान के सहचर'। हमें हिमालय के जंगलों में, पहाड़ों में रहने का मौका मिला। वहाँ घास-पात के अलावा कुछ भी

नहीं था। हमने सोचा कि इस एकांत में, सुनसान में हम कैसे रह सकते हैं ? सुनसान में आदमी नहीं रह सकता है। हमने वहाँ भी अन्य प्राणियों का कुटुंब बना लिया। कुटुंब के बिना मनुष्य रह नहीं सकता। आदमी अपने गुणों का विकास कुटुंब के बिना, परिवार के बिना कहाँ कर सकता है ? आदमी कहाँ सीख सकता है ? धर्मपत्नी के प्यार का, एक आत्मा का दूसरे आत्मा के साथ समर्पण का, उसके प्यार का अनुभव आदमी परिवार के अतिरिक्त और कहाँ कर सकता है ? आप अपनी पत्नी के बिना यह सब कहाँ से लाएँगे ? कहाँ से पाएँगे ? कहाँ से सीखेंगे ? आप वेश्यालय जाकर वासना पूर्ति कर सकते हैं, लेकिन प्यार-मोहब्बत आप नहीं ला सकते हैं। आप माँ-बाप का प्यार कहाँ से लाएँगे ? कौन से बाजार से लाएँगे ?

माँ का स्नेह-वात्सल्य पीकर शिवाजी की आत्मा, लव-कुश की आत्मा न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गई। शकुंतला का प्यार पीकर भरत की आत्मा क्या से क्या हो गई ? आपने माँ का प्यार नहीं पिया

क्या? नहीं साहब! हमारी माँ नहीं है, परंतु एक आदमी कह रहा था कि आपकी माँ जिंदा है। मित्रो! वह आपकी माँ नहीं है, वह है आपके घर में रहने वाली एक बुढ़िया, जिसे आप फटकार भी लगाते रहते हैं। इधर से उधर भगाते भी रहते हैं। वह आपकी माँ नहीं हो सकती है। माँ का तो आपने दर्शन भी नहीं किया। आप तो संतोषी माता, शीतला माता को पूजते रहे, लानत है आपको। काश, अगर आप अपनी माँ को समझे होते, उसके प्यार का बदला चुकाया होता। उसके अनुदान का बदला चुकाया होता तो आप धन्य हो जाते। आप अभागे हैं, जो माता के नाम पर न जाने क्या-क्या करते रहे, संतोषी माता, मनसा देवी को पूजते रहे। इसी तरह के ख्वाबों में आप भटकते रहे। आप जाइए जहन्नुम में, जिसने आपकी माँ को समझा ही नहीं।

सच्ची मित्र आपकी अपनी पत्नी

मित्रो! आप आसमान पर चलना बंद कीजिए और जमीन पर चलना शुरू कीजिए। आपकी सच्ची

मित्र अपनी पत्नी को आप संस्कारवान बनाएँ। उसे ऊँचा उठाइए। राम-भरत की तरह रहिए। अपनी बीबी की मोहब्बत को देखिए। हमने बीबी में से धर्मपत्नी को पैदा किया। औरत कामिनी नहीं है, वह धर्मपत्नी है। हमारी धर्मपत्नी हमारी सहयोगी है, साथी है। हम लोग आपस में बातचीत कर सकते हैं। कामवासना पर लानत है। हम दोनों का समर्पण, प्यार अद्वितीय है। हम एकदूसरे के लिए जीवन जीते हैं। एकदूसरे को देखकर हमारे चेहरे प्रसन्न हो जाते हैं। औरत सब अच्छी होती हैं, आपने सभी की तरह से उसे भी समझा है। आपने उसे मोहब्बत दी होती, सहकार दिया होता तो वह आपकी सहयोगी होती। आप वनवास में भी होते तो भी सीता की तरह साथ होती। आप राजा नल की तरह से दमयंती को वन में अकेले छोड़ जाते तो भी वह आपकी धर्मपत्नी होती, परंतु आपने उसे धर्मपत्नी कब बनाया है? धर्मपत्नी नहीं बनाया। आप अगर उसे धर्मपत्नी बनाने का प्रयास करते तो यह घर स्वर्ग बन जाता।

साथियो! हमने कुटुंब तथा परिवार के महत्त्व को बतलाने हेतु ही यह शिविर लगाया है। अगर यह सिद्धांत आप सीख लेते तो धन्य हो जाते। हमने सुना है कि वहाँ स्वर्ग होता है, जहाँ परियाँ होती हैं, लोग आनंद-विभोर जीवन जीते हैं, परंतु वह स्वर्ग तो हमने देखा नहीं। हम गए भी नहीं, अगर गए होते तो आपको बतला देते कि स्वर्ग ऐसा होता है। परंतु एक स्वर्ग हमने देखा है और वह है, गृहस्थ जीवन। यह जमीन का स्वर्ग है, जिसका नाम गृहस्थ है, अगर बनाने वाला हो तो? परंतु अगर आपने औरत को बना दिया बाघिन तथा बच्चों को बना दिया डकैत, माँ को शाप देने वाली चुड़ैल तथा भाई को बना दिया एकदूसरे को मार-काट करने वाले, तो लानत है आपके इस कुटुंब के ऊपर। अरे साहब हम तो कमाते हैं। लानत है आपकी कमाई पर। कमाई और खरच पर दुनिया नहीं टिकी हुई है। अगर जीवन में मोहब्बत तथा प्यार नहीं है तो कोई फायदा नहीं होगा परिवार बसाने से।

आप यहाँ से एक नई दृष्टि लेकर जाइए। कुटुंब को जंजाल मत कहना, वरन बगीचा कहना। आप इसका उपभोग करने वाले नहीं हैं। यह बगीचा किसी और का है, आप माली की तरह रहना। यहाँ भगवान ने आपका इम्तहान लेने, आपकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से भेजा है कि आप इसी बगीचे को प्यार-मोहब्बत दे सकते हैं या नहीं? आपकी बीबी नौवीं दरजा तक पढ़कर आई थी, आपने उसे आगे पढ़ाया या नहीं? केवल यह कह दिया कि हम तो गरम खाना खाएँगे, चाहे दिन के दो बजे हों या रात ही क्यों न हो, तुम्हें उसी समय बनाना पड़ेगा।

मित्रो! मैं यह पूछता हूँ कि जे० बी० मंघाराम आपको गरम खाना खिलाता है क्या? आप जो ये बिस्कुट खाते हैं, वह छह महीने पुराना है, जिसे आप बड़े चाव से खा जाते हैं और बीबी को आप कहते हैं कि हम गरम खाना खाएँगे। आपको उसने इसीलिए खसम बनाया है क्या? दिनभर उसका खून पीते हैं। आप गरम खाना खाते हैं न, ऐसा

कीजिए गरम लकड़ी मुँह में रख लीजिए और रोटी खाते जाइए। बीड़ी पीते जाइए और रोटी खाते जाइए। ये सब आपकी बुरी आदतें हैं, इन्हें छोड़िए! नहीं साहब हम तो गरम खाना खाएँगे। अरे थोड़ी देर पहले का बना खा लेने पर क्या आफत आ जाएगी? गरम खाने के पीछे उसकी शिक्षा, उसका सोना, उसका चिंतन करने का सारा का सारा समय बरबाद हो गया। सारा का सारा समय खाना पकाने में खरच हो गया। मैं यह पूछता हूँ कि क्या इसे दांपत्य जीवन कहते हैं? क्या इसे स्नेह कहते हैं? क्या इसे सहकारिता कहते हैं? अरे मक्कारो! यह तो मालिक तथा जानवरों का व्यवहार और मालिक तथा दासी का व्यवहार है। यह समानता का व्यवहार नहीं है।

आपने उसे पढ़ाया क्यों नहीं? आपके पास वह नौवीं दरजा पास करके आई थी, फिर उसको आगे क्यों नहीं पढ़ने दिया? अरे साहब! समय नहीं मिला। आपको उसकी नींद खराब करने के लिए चार घंटे का समय मिल गया, परंतु उसके विकास

के लिए एक घंटे का भी समय नहीं मिला। यदि एक घंटा पढ़ा दिया होता तो वह अभी तक बी० ए० हो जाती। आपने उसे नौकरानी बनाकर रखा ताकि वह आपकी हुकूमत में रह सके। आपने उसके पंख मुरगी के पंख की तरह से काट दिए। उसे कभी भी उड़ने नहीं दिया, ताकि वह आगे न बढ़ सके। आपने उसे कबूतर की तरह पाल रखा है और आप कबूतर की तरह से उसके पंख काटते रहते हैं, ताकि वह कभी भी स्वावलंबी न बन सके। उसे कभी नौकरी भी नहीं करने दी।

मित्रो! यह आपका अहंकार तथा अविश्वास है। क्या शिक्षा बुरी बात है? यदि है तो आप अपने बेटे को, बेटी को, भाई को क्यों पढ़ाते हैं? आपने बीबी को ही क्यों मना कर दिया? उसको क्यों नहीं आगे बढ़ाया? क्या यही दृष्टिकोण है, आपके दांपत्य जीवन का? क्या यही आपकी दृष्टि है कुटुंब के, परिवार के विकास के प्रति? आप उसे दबाकर केवल शरीर का, पसीने का, श्रम का फायदा उठा सकते

हैं। बस यही है कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व आपका अपनी पत्नी के प्रति। इस तरह आप कभी भी उसके सहयोग, सम्मान और श्रद्धा का लाभ नहीं उठा सकते हैं, जो श्रम से लाखों गुना फायदेमंद हैं। क्या इस संबंध में आपने समझने का, ख्याल करने का कभी प्रयास नहीं किया है।

पैसे का नहीं, संस्कारों का संबंध हो

मित्रो! मैं आप सबसे घर-परिवार की बात कहता हूँ। आपसे यह कहता हूँ कि परिवार में जिनके साथ आपकी डीलिंग है, संबंध है, उसके साथ आप शराफत का व्यवहार कीजिए। इसका एक मतलब यह है कि उनको आप शालीनता, सज्जनता सिखाएँ। उनको आप स्वावलंबी बनाएँ, उनको गुणवान बनाएँ। आपको इससे पुण्य मिलेगा। आप जब घर में प्रवेश करेंगे, तो आपको ऐसा मालूम पड़ेगा कि आप स्वर्ग में प्रवेश कर रहे हैं। इतना ही नहीं आप इस परिवार में, कुटुंब में शांति प्राप्त करेंगे। आप सफल गृहस्थ होंगे। आपको ऐसा लगेगा

कि हम देवताओं की दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। हम शांति के सागर में प्रवेश कर रहे हैं। पैसे की दुहाई मत दीजिए। नहीं तो आपको केन्या देश के मसाई की संज्ञा दे देंगे। केन्या वाले, नंगे रहने वाले जिनके पास घर भी नहीं है, परंतु वे काफी हिम्मती होते हैं। शेर को मारकर रख लेते हैं, फिर उसकी पूँछ को पकड़कर ले आते हैं, परंतु उनकी ताकत का क्या कहना? जहाँ कहीं भी खेलकूद प्रतियोगिता होती है, वे वहाँ से छह-सात स्वर्णपदक तक जीतकर ले आते। ऐसी परिस्थिति में विश्व में कानून बनाना पड़ा कि तीन से ज्यादा स्वर्णपदक इन्हें नहीं दिए जा सकते। आप पैसों के पीछे पागल हैं। उससे ताकत बटोरना चाहते हैं। आप सोचते हैं कि हम बच्चे को काजू, पिस्ता खिलाएँगे तथा उसे ताकतवर बनाएँगे। लानत है ऐसे पैसों को। हम क्रीम लाएँगे तथा पाउडर लाएँगे। अरे हम पूछते हैं कि क्या इसके बिना सेहत सही नहीं होगी। इससे बच्चों में संस्कार नहीं लाए जा सकते हैं।

मित्रो! लव-कुश जो महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहते थे। कुशा एवं पत्तों का बना आश्रम था उनका। वहाँ न कोई मास्टर-अध्यापक था, न कोई उन्हें ट्यूशन पढ़ाने वाला था। न अच्छा भोजन था, न मोटरगाड़ी थी, परंतु जमीन पर सोने वाले बच्चे इतने महान ताकत वाले, संस्कारवान बन गए कि जब वे रामचंद्र जी के दरबार में गए तो उनके सद्गुणों के आगे सब लोग नतमस्तक हो गए। इतने समुन्नत बच्चे कैसे बन गए?

आज आप सोचते हैं कि पैसों से लड़कों को संस्कारवान बना लेंगे। यह फजूल की बातें मत कीजिए। पैसों से केवल आप घर की सजावट बढ़ा सकते हैं। आप बच्चों में प्राण-जीवट नहीं भर सकते हैं। उन्हें संस्कारवान नहीं बना सकते हैं। अगर उनमें प्राण, संस्कार आप भर सकें तो ये काले बच्चे, चेचक के दाग वाले बच्चे चमत्कार कर देंगे, फिर आपका घर चाहे फूस, मिट्टी का बना हो, वहाँ स्वर्ग होगा। अगर बाजरा और नमक की रोटी भी

होगी तो भी बच्चे स्वस्थ-सानंद होंगे। आपस में प्यार-मोहब्बत हो तो पैसे का अभाव, विकास में बाधक नहीं होगा तथा घर में स्वर्ग का वातावरण होगा। आप संस्कार का मूल्य एवं महत्त्व समझें।

इस संदर्भ में हम आपकी अदालत में विनोबा की माँ को पेश करते हैं। विनोबा की माँ बहुत गरीब थीं। बहुत बार वह गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चना पीसने को ले आती थीं। विनोबा अपनी माँ की बगल में बैठे होते थे। अनाज पीसते समय कुछ दाने इधर-उधर जा पड़ते थे। विनोबा उन्हें चुनकर खाते रहते थे। नाश्ते का कोई प्रबंध नहीं था। विनोबा की तरह गरीब तथा अभावग्रस्त परिवार शायद ही कोई हो, परंतु उनकी माँ ने तीनों लड़कों को संत, महात्मा बना दिया। उनमें से एक का नाम विनोबा, दूसरे का बाल्कोवा और तीसरे का शिबोवा था। तीनों देश के लिए समर्पित थे। मदालसा की बात तो पुरानी हो गई।

मित्रो! आप अपने बच्चे को संत, सुधारक नहीं बनाना चाहते हैं। आप तो उसे इनकमटैक्स

ऑफीसर, पुलिस का दरोगा बनाना चाहते हैं। वकील बनाना चाहते हैं, जो सच्चे को फँसा दे तथा झूठे को जिता दे। यही चाहते हैं न आप? आप चाहते हैं कि आपका लड़का सिविल इंजीनियर हो जाए, ताकि वैगन के वैगन सीमेंट तथा लोहा खा जाए तथा एक वर्ष में ही मकान बना ले, बीबी के गहने बना ले तथा बहन की शादी में लाखों रुपए भी खरच कर दे। उसे मासिक पेमेंट तो कुछ हजार रुपए ही मिलते हैं, तो फिर इतना सारा पैसा वह कहाँ से लाएगा? इसके लिए क्या किया, उसको आपने देखा नहीं, उसने रेल की लाइनों को कमजोर कर दिया। देश को तबाह कर दिया आपके बेटे ने। यही चाहते थे न आप? मक्कार कहीं के, बेटे को गलत रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। उसे सभ्य नागरिक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापक नहीं बनाएँगे?

दृष्टिकोण बदलें, तनावमुक्त हों

मित्रो! मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आप आज से अपना दृष्टिकोण—महत्त्वाकांक्षाओं के बारे

में, घर-परिवार, कुटुंब के बारे में, अध्यात्म के बारे में बदल दीजिए। आपकी उँगलियों की तरह ही आपका कुटुंब आप से जुड़ा हुआ है। आपकी उन्नति, प्रगति, समृद्धि, विकास सारा का सारा आपके कुटुंब के साथ जुड़ा है। अत: इस संदर्भ में आप अपना विचार बदल दें। अरे नहीं साहब! हमें टेंशन की शिकायत है। टेंशन किसे कहते हैं? जिसमें दिमाग में तनाव रहता है, नींद नहीं आती, गरमी रहती है। आपके घर में स्नेह-सहयोग का वातावरण नहीं है, इसी कारण यह परिस्थिति है। यूरोप की दुनिया में यह गलती सभी ने की है। इसी कारण वहाँ लोगों ने कुटुंब, परिवार संस्था को बरबाद करके रख दिया है। केवल मियाँ-बीबी का रिश्ता रह गया है। उसमें भी टिकाऊपन नहीं है। सिद्धांत के बिना क्या टिकाऊपन होता है? उनके यहाँ छह महीने के बाद नई बीबी, नया पति होता रहता है। उन्होंने कुटुंब-परिवार का सर्वनाश कर दिया है। इसका एक ही कारण है कि उनके ऊपर एक भूत सवार हो गया है

और उसका नाम है—'सेक्स'। खूबसूरती के लिए उन्होंने परिवार संस्था का सत्यानाश कर दिया। वहाँ भौंरे की तरह से औरतें तथा मरद घूमते रहते हैं तथा जहाँ भी खुशबू होती है, वहीं हावी हो जाते हैं। वे अभागे, दुखी, हारे हुए दिखाई पड़ते हैं। आप हैं जो हमेशा 'फॉरेन' जाना चाहते हैं। क्या करेंगे वहाँ जाकर? बरबाद हो जाएँगे। वहाँ का पैसा देखा है आपने? आप 'फॉरेनर' को ध्यान से देखना, वे बिलकुल खाली और खोखले हो गए हैं।

मित्रो! इस दुनिया में सबसे ज्यादा सुंदर मोहब्बत-प्यार की दुनिया थी, परंतु अब आपने उसे चौपट कर दिया है तथा सब इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। आदमी आज अकेला इक्कड़ की तरह हो रहा है। वह भूत की तरह हो गया है। उसे अपनी बीबी से और बीबी को खसम से डर हो गया है। वे हमेशा चिंतित रहते हैं कि कहीं दोनों एकदूसरे पर हावी न हो जाएँ। इस प्रकार से उनकी नींद हराम हो जाती है। आप देखिए न, देश-विदेशों

में कितनी ट्रैंक्युलाइजर खपत होती है, मात्र नींद लाने के लिए। इनको दिनभर थकान रहती है। वे कॉफी, बियर, रम पीते रहते हैं तथा रात में सुरा-सुंदरी में डूबे रहते हैं। लड़के से जब पूछा जाता है कि तेरे पिताजी कौन हैं, तो वह कहता है कि नंबर ८, नंबर ९। पत्नी भी उसी क्रम में नंबर ५, नंबर ६ होती है। आज कैबरे डांस, क्लबों के अलावा लोगों में शांति नहीं है। आज यूरोप, अमेरिका में परिवार-कुटुंब के नाम पर क्या रहता है? सेक्स। सेक्स यानी भूत। आज लड़की की शादी में लोग 'कट' देखते हैं और कहते हैं कि शौक से शादी करेंगे। अगर यही पाश्चात्य बीमारी आपके घर में, पत्नी में आ गई तो आपका कचूमर निकल जाएगा। वह भी आपको जहर दे सकती है तथा आपका सर्वनाश कर सकती है। आप परिवार तथा कुटुंब का आधार सेक्स बनाना चाहते हैं। आप इस तरह की गृहस्थी बसाएँगे क्या? इस तरह का कुटुंब बसाएँगे क्या?

मित्रो! आप इस तरह का परिवार-कुटुंब मत बसाइए। आप प्यार-मोहब्बत का परिवार, स्नेह-सहयोग का कुटुंब बसाइए तो आपके जीवन में सुख-शांति आएगी। आपकी आत्मोन्नति होगी, विकास होगा तथा इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा, आपका जीवन देवतुल्य होगा। इसी को बताने के लिए हमने आपको इस सत्र में बुलाया। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

पारस्परिक आत्मीयता का व्यवहार हो

विवाह को लड़की-लड़के की आदर्शसम्मत भावभरी मित्रता समझा जाना चाहिए। दोनों के बीच सम्मान और सहकार की गहराई रहनी चाहिए। मुद्दतों पुराने यह कुसंस्कार चले आते हैं कि नारी को हेय और नर को श्रेष्ठ माना जाता है, इसलिए आमतौर से पुरुष पत्नी के साथ ऐसा व्यवहार किया करते हैं, मानो वह हेय, हीन, नौकरानी स्तर की हो। यह मान्यता घातक है। हँसी-मजाक में कोई किसी पर व्यंग्य भी कर सकते हैं, पर जहाँ तक गंभीरता का प्रश्न है, वहाँ ऐसी स्थिति न आने देनी चाहिए, जिसमें गाली-गलौज, मार-पीट, ताना-उलाहना आदि का पुट हो। विवाह से पूर्व देखा जा सकता है कि रंग-रूप अनुकूल रहा या नहीं, किंतु विवाह के बाद इस प्रसंग की चर्चा छोड़ ही देनी चाहिए और साथी की सेवा और समर्पण के

प्रति कृतज्ञता ही प्रकट करनी चाहिए। कुरूपतापरक व्यंग्य तो किसी भी दशा में नहीं करना चाहिए। यह गाली-गलौज से भी बुरे किस्म का व्यंग्य है, जो कभी-कभी ऐसी गहरी खाई खड़ी कर देती है जो पटने में नहीं आती। साथी के रूप में छींटाकशी करने का प्रयत्न का अर्थ यह होता है कि उससे संतोष नहीं है। इस आधार पर यह भी फलितार्थ निकलता है कि साथी चरित्रहीन है या उसकी प्रवृत्ति उस ओर मुड़ चली है।

एकदूसरे का सम्मान करें

विवाह की सफलता में एक बहुमूल्य तथ्य यह है कि एकदूसरे का भरपूर सम्मान करें। व्यंग्य विनोद में भी हलका-फुलका असम्मान न करें। क्योंकि प्रेम की भाषा सम्मान ही है। जहाँ गहरे सद्भाव होंगे वहाँ अपमान के प्रसंग न प्रत्यक्ष में आवेंगे न परोक्ष में। यहाँ तक कि क्रोध-आवेश में भी ऐसे शब्द मुँह से न निकलें जो अगले को महत्त्वपूर्ण और दूसरे को हेय ठहराते हों। इसलिए यह अभ्यास

आरंभ से ही डालना चाहिए कि कटु वचनों का आदान-प्रदान किसी भी रूप में चलने न पाए।

वह समय गुजर गया जब लोग दास-दासियों से, स्त्री-बच्चों से कैसा भी अपमानजनक व्यवहार कर लिया करते थे और वे दूसरों का बड़प्पन अपनी लघुता को ध्यान में रखते हुए कटु और अपमानजनक व्यवहार को भी सहन कर लेते थे पर अब वह स्थिति बहुत पीछे रह गई। हर किसी को दूसरों से सम्मान की आकांक्षा रहती है। भले ही वह वास्तविक न होकर शिष्टाचार ही क्यों न हो! पत्नी पति के कटुवचन विवशता समझकर सह तो सकती है पर उसके हृदय में चोट न लगती हो ऐसी बात नहीं है। अस्तु, यदि दांपत्य जीवन को सरल रखना है तो उसमें प्रेमभावना ही नहीं, शिष्टाचार और मधुर भाषण का समावेश चाहिए। समय ने अशिष्ट आचरण और व्यवहार को एक प्रकार अस्वीकार ही कर दिया है। पिछड़ी प्रथाओं को फिर से प्रयोग

करके उनके दुष्परिणामों को दोहराने वाले समझदार नहीं मूर्ख कहे जाते हैं।

सदा दानी का पद ऊँचा और ग्रहीता का नीचा माना गया है। पत्नी दानी है और पति ग्रहीता। इस दृष्टि से भी उसे सम्मान पाने और सहयोग लेने का अधिकार है। पति को इन दोनों के संबंध में कृपणता नहीं बरतनी चाहिए। वरन स्त्रियों का मानस अधिक संवेदनशील होता है। उन्हें मान-अपमान अधिक प्रभावित करता है। इस दृष्टि से स्त्रियाँ कदाचित ही चूक करती हैं पर पुरुष जान-अनजान में, उपेक्षा और अहंकार में ऐसी भूलें प्राय: करते रहते हैं। इस संबंध में दोनों को ही एकदूसरे की वरिष्ठता और प्रसन्नता का ध्यान रखना चाहिए, विशेषतया पति को। क्योंकि हृदय की संरचनाएँ ही ऐसी होती हैं जिस पर भावनाओं का अधिक भला-बुरा प्रभाव पड़ता है।

पति का कर्त्तव्य

स्त्री अपने पिता के घर से जैसा स्वास्थ्य, शिक्षा, ज्ञान, हर्षोल्लास, अधिकार साथ लेकर आई

थी उसमें कमी न पड़ने पाए यह पति का कर्त्तव्य है। कन्यादान दिए जाने का तात्पर्य ही यह है कि अब तक जो जिम्मेदारियाँ कन्या को विकसित करने की पिता की थीं, वे सब अब पति को सौंप दी गईं। कन्यादान सबसे बड़ा दान माना गया है। उसे ग्रहण करते समय उसके श्रेष्ठतम सदुपयोग की जिम्मेदारी पति के मस्तिष्क में निरंतर रहनी चाहिए।

❐

सद्वाक्य

✧ सदाचार की शक्ति अनाचार से हजार गुना बढ़कर है।

✧ भय हमारी स्थिरता और प्रगति में सबसे बड़ा बाधक है।

✧ दृढ़ आत्मविश्वास ही सफलता की एकमात्र कुंजी है।

✧ हृदयहीन होना मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

✧ ईश्वर को मनुष्य के दुर्गुणों में सबसे अप्रिय 'अहंकार' है।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)